[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3694

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

कालिदास के चित्रों में रंगों का प्रयोग

डॉ. नीता तोमर
चित्रकला, 67, दीप्ती विहार कॉलोनी, उज्जैन

शोध सारांश

काव्य एवं नाटक के क्षेत्र में एक समान असाधारण प्रतिभा के धनी महाकवि कालिदास जैसे समर्थ रचनाकार विश्व साहित्य के इतिहास में भी बिरले ही होंगे जिन्होंने अपनी कृतियों में प्रसंगानुसार यथास्थान विभिन्न रंगो का सुन्दर और सटीक प्रयोग किया है। महाकवि कालिदास के मानस में रंगों के लिए आकर्षण उनके जीवन के आरम्भ से ही रहा होगा क्योंकि उनकी प्रथम रचना 'ऋतुसंहार' में भी रंगों के विशेष संदर्भ मिलते हैं। उन्होंने अपनी कृतियों में स्थान–स्थान पर विभिन्न रंगों की ऐसी योजना प्रस्तुत की है, जो सहज ही मन मोह लेती है। रंगों के माध्यम से अपनी उपमाओं को सार्थक और विलक्षण बनाने की अदभुत काव्यात्मक शक्ति महाकवि कालिदास के पास है।

शब्द कुंजी : कालिदास के चित्रों में रंगों का प्रयोग

प्रस्तावना

महाकवि कालिदास ने अपनी विश्वविख्यात कृतियों में स्थान–स्थान पर विभिन्न रंगों की मनमोहक रंगों की योजना प्रस्तुत की है, उन्होंने रंगों के माध्यम से अपनी चित्रात्मक उपमाओं को विलक्षण और अद्भुत बनाया है। उन्होंने धौले रत्न, मटमैले पानी, हरी हरी घास, बिम्बा फल जैसे लाल ओठ, नीले कमल, बालों की काली लटों, काली आँखों, सुनहरी करधनी, नीली आँखे, स्तनों पर चन्दन लेपन, मुख पर चित्रकारी, कुंकुमी रंग के कंठ हार, सुनहरे कमल लाल–लाल ओंठ आदि के द्वारा ऋतुसंहारम् को रंगमय बनाया है।

ऋतुसंहारम् के दूसरे सर्ग के आरम्भ में वर्षा ऋतु के आगमन के साथ आकाश में छा जाने वाले बादलों को केवल नीला, पीला और काला कहकर ही सन्तुष्ट नहीं करते बल्कि बतलाते हैं कि वे बादल नीलकमल की पांखुरी जैसे नीले हैं, गर्भिणी के स्तनों के समान पीले हैं और घुटे हुए आँजन की ढेरी के समान काले हैं।[1]

'मेघदूत' के पूर्वमेघ में आम्रकुट पर्वत की, पृथ्वी के स्तन के रूप में कल्पना करते हुए काले और पीले रंग का सुन्दर बिम्ब प्रस्तुत किया है। महाकवि कालिदास ने कहा है कि पके हुए आमों से लदे हुए वृक्षों से घिरा आम्रकूट पर्वत पीला सा हो गया है; उसकी चोटी पर जब तुम (मेघ) कोमल बालों के जूड़े के समान साँवला रंग लेकर चढ़ोगें तब वह पर्वत, देव दम्पत्तियो को दूर से ऐसा लगेगा मानो वह धरती का उन्नत उरोज है, जो बीच में काला और चारो और पीला है।

चित्रात्मकता के प्रति चिर आकर्षित महाकवि कालिदास ने 'मेघदूतम्' में अलकापुरी के सौन्दर्य को रंग–रंगीले चित्रों से सजाया है और उन चित्रों की तुलना आकाश के इन्द्रधनुष से की है। विरही यक्ष बादलों से कहता है कि अलकापुरी के ऊँचे भवन तुम्हारे जैसे ही हैं । तुम्हारे साथ विद्यतु है तो उन भवनों में दमकती स्त्रियॉ है। और यदि तुम्हारे पास इन्द्रधनुष है तो अलका के भवनों में भी रंग–बिरंगे चित्र लटके हुए हैं। तुम यदि मृदु गंभीर गर्जन करते हो तो वहाँ भी संगीत के साथ मृंदग बजते हैं। तुम्हारे भीतर नीला जल है तो उन भवनों में भी नीलम जड़े हुए हैं और यदि तुम ऊँचे चढे हुए हो तो उन भवनों की अटारियॉ भी आकाश की ओर उठी हुए हैं।[2]

विभिन्न रंगों के माध्यम से सुन्दर उपमाएं देने में तो महाकवि कालिदास सिद्धहस्त हैं ही। 'कुमारसंभव' में पार्वती के सौन्दर्य वर्णन में रंगों के माध्यम से अत्यन्त रंजक उपमा देते हुए महाकवि कालिदास ने कहा है कि उनके लाल ओठों पर मुस्कुराहट का उजलापन ऐसा सुन्दर लगता है जैसे लाल कोंपल में कोई उजला फूल रखा हो अथवा स्वच्छ मूंगे के बीच में मोती जड़ा हो ।

रंगों और चित्रात्मकता के प्रति महाकवि कालिदास का आकर्षण ऐसा प्रबल है कि न केवल मनोहारी और श्रृंगारी प्रसंगों में अपितु युद्ध आदि के वीभत्स वर्णनों में भी वे प्रभावी दृश्य–चित्र प्रस्तुत कर देते हैं और ऐसे में जिन रंगों का उल्लेख करते हैं,

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

वे भी असामान्य प्रतीत होते हैं, उदाहरणार्थ 'कुमारसंभव' में कुमार कार्तीकेय और असुर तारका के घनघोर संग्राम का चित्रण करते हुए महाकवि ने जो दृश्य प्रस्तुत किये हैं, उनमें धधकते अंगारों के लहू जैसे लाल रंग के साथ दसों दिशाओं से उठ रहें धुँए के रंग को गधे के गले के रंग के समान भूरा बताया है।[3]

इसी प्रकार 'रघुवंशम्' में भी स्थान–स्थान पर विभिन्न रंगों के बिम्बों के द्वारा सटीक प्रभाव निर्मित किया गया है। उन्होंने उजले वस्त्र पहने हुए राजा दिलीप की उपमा चैत्र पूनम के दिन चित्रा–नक्षत्र के साथ उदित होने वाले उजले चन्द्रमा से दी है। यह कहा जा सकता है कि प्रसंगानुसार विभिन्न रंगों का उल्लेख महाकवि कालिदास की सभी कृतियों में प्राप्त होता है।

रंगों के प्रतिबिम्ब के अत्यन्त मनोहारी चित्रण महाकवि कालिदास की रचनाओं में उपलब्ध है। 'रघुवंशम्' में रघु से युद्ध करते हुए देवराज इन्द्र के धनुष के वर्णन में महाकवि कालिदास ने कहा है कि इन्द्र का धनुष ऐसा सुन्दर था कि उसने थोडी देर के लिए नए बादलों में इन्द्रधनुष जैसे रंग भर दिए।[4]

'मालविकाग्निमित्र' नाटक को महाकवि कालिदास द्वारा रचित प्रथम नाट्यकृति माना जाता है। इस नाटक में राजोद्यान के अशोक वृक्ष की सुन्दरता का वर्णन महाकवि कालिदास ने किया है। राजा अग्निमित्र विस्मयपूर्वक देखते हुए कहता है कि मैं आँखे फाड़कर देख रहा हूँ कि इस लाल अशोक के वृक्ष की लालिमा ने सुन्दरियों के बिम्बाधरों की ललाई को लजा दिया है। कुरबक के काले, उजले और लाल रंग के पुष्पों ने स्त्रियों के मुख की चित्रकारी को फीका कर दिया है। काले भँवरों से घिरे हुए तिलक के फूलों ने स्त्रियों के मस्तक के तिलक को नीचा दिखा दिया है। ऐसा लगता है कि जैसे वंसत की शोभा आज सुन्दरियों के मुख के श्रृँगार का निरादर करने पर तुली हुई है।[5]

महाकवि कालिदास की नाट्यकृति विक्रमोर्वशीय में विदूषक द्वारा पुरूरवा को उर्वशी का चित्र बनाने के साथ ही यह सलाह भी दी जाती है कि वह गहरी नींद में सो जाये, जिससे की स्वप्न में उर्वशी के दर्शन कर सके । विदूषक की सलाह सुनकर पुरूरवा उत्तर में कहता है कि मेरे लिए दोनों ही बाते सम्भव नही हैं । कामदेव मेरे हृदय को दिन–रात बेधता रहता है अतः मुझे भला ऐसी नींद कैसे आऐगी जिसमें अपनी प्रिया से भेंट हो जाये और मैं उर्वशी का चित्र भी नही बना सकता क्योंकि बीच में नयन भर आने से वह चित्र अपूर्ण ही रह जायेगा।[6]

महाकवि कालिदास की नाट्य रचनाओं में 'अभिज्ञानशाकुन्तल' सर्वश्रेष्ठ है, जिसे विश्व की सर्वोत्तम नाट्य–कृतियों में प्रतिष्ठा प्राप्त है। दुष्यन्त स्वयं के द्वारा निर्मित चित्र की कमियाँ दिखलाते हुए कहता है कि चित्र की कोरों पर मेरी पसीजी हुई ऊँगलियों के काले धब्बे पढ़ गए हैं। और आँखों से जो आँसू गिरा, उससे शकुन्तला के गाल का रंग उभर आया है। अभी इस विनोद स्थान का चित्र पूरा नही बन पाया है, इतना कहकर दुष्यन्त चित्र को पूर्ण करने के लिए तूलिका लाने के निर्देश देता है।[7]

देवताओं के राजा इन्द्र का सारथी राजा दुष्यन्त से कहता है कि देवतागण आपके पराक्रम के गीत रचकर कल्पवृक्ष के कपड़ों पर उन रंगों से लिख रहे हैं; जो अप्सराओं के श्रृँगार से बचे रह गये हैं। इस वर्णन से यह आभास भी होता है कि जो सामग्री श्रृँगार–प्रसाधन में उपयोग में लाई जाती थी उसका प्रयोग चित्र बनाने एवं रंग भरने में भी किया जाता था ।[8]

निष्कर्ष

इस प्रकार निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि महाकवि कालिदास ने चित्रकला एवं रंगों के प्रति अपने सहज आकर्षण के अनुरूप विभिन्न सन्दर्भ अपनी सातों विश्वविख्यात कृतियों 'ऋतुसंहार', 'मेघदूत', कुमारसम्भव, रघुवंश, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञानशाकुन्तल में प्रस्तुत किये है। इन सन्दर्भो से न केवल यह अनुमान होता है कि अन्य कलाओं के समान चित्रकला के प्रति भी महाकवि कालिदास के मन में असीम आकर्षण था अपितु वह स्वयं भी चित्रकला के एवं रंगों के अच्छे ज्ञाता थे । इस प्रकार रंग–संयोजन, दृश्य–संयोजन, अनुपात, कल्पना–शीलता, चित्रकला के विभिन्न उपकरण और चित्र रचना की प्रक्रिया विषयक रंगों के सन्दर्भ में महाकवि कालिदास के असाधारण ज्ञान के संकेत मिलते हैं। यद्यपि महाकवि कालिदास ने अपनी कृतियों में लाल, पीला, नीला, हरा, सफेद, सुनहरा, केशरिया, गेरूआ, सिंदुरी, कुंमकुमी मटमैला, भूरा, काला, साँवला आदि विभिन्न रंगों का प्रयोग किया है, परन्तु लाल रंग के प्रति उनका विशेष आकर्षण व्यक्त हुआ है। काव्य सौन्दर्य की अभिवृद्धि और मनोभावों के समुचित संप्रेषण के लिए महाकवि कालिदास ने अपनी समस्त रचनाओं में सटीक और सार्थक रंग योजना को साकारा किया है। अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि महाकवि कालिदास ने अपनी कृतियों में

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

सटीक एवं सार्थक रंग योजना का प्रयोग किया है। महाकवि कालिदास केवल शब्दों में ही नही अपितु रंगों के भी अद्भुत चितेरे है।

संदर्भ –

1 *महाकवि कालिदास : ऋतुसंहारम् : 2/2 कालिदास ग्रंथावली : सम्पादक पंडित सीताराम चतुर्वेदी : पृष्ठ क्र. 432*
2 *महाकवि कालिदास : मेघदूतम् उत्तरमेघ/1 : कालिदास ग्रन्थावली : सम्पादक पंडित सीताराम चतुर्वेदी : पृष्ठ क्र. 409*
3 *महाकवि कालिदास : कुमारसम्भवम् 15/21 : कालिदास ग्रन्थावली : सम्पादक पंडित सीताराम चतुर्वेदी : पृष्ठ क्र. 367*
4 *महाकवि कालिदासः रघुवंशम् 3/53 : कालिदास ग्रन्थावली : सम्पादक पंडित सीताराम चतुर्वेदीः पृष्ठ क्र. 35*
5 *महाकवि कालिदास : मालविकाग्निमित्रम्ः अंक 3 : कालिदास ग्रन्थावलीः सम्पादक पंडित सीताराम चतुर्वेदीः पृष्ठ क्र. 302*
6 *महाकवि कालिदास : विक्रमोर्वशीयम् द्वितीय अंक/10 कालिदास ग्रन्थावली : सम्पादक – पंडित सीताराम चतुर्वेदी : पृष्ठ क्रमांक : 179*
7 *महाकवि कालिदास : अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अंक 6/15 कालिदास ग्रन्थावली : सम्पादक – पंडित सीताराम चतुर्वेदी : पृष्ठ क्रमांक : 115*
8 *महाकवि कालिदास : अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अंक 7/5 कालिदास ग्रन्थावली : सम्पादक – पंडित सीताराम चतुर्वेदी : पृष्ठ क्रमांक : 129*